www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 17 रोहतक, 28 सितम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

राष्ट्रभाषा हिन्दी की वर्तमान दशा

❑ डॉ० जगदेव विद्यालंकार, सेवानिवृत्त प्राचार्य, रा०म०, रोहतक

भाषा वही महत्त्वपूर्ण होती है जो लोगों को तोड़ने की अपेक्षा जोड़ने का कार्य करे तथा जिसके माध्यम से प्रेम का पथ-प्रशस्त हो। यह प्रेम का पथ इस राष्ट्र में केवल हिन्दी के माध्यम से ही प्रशस्त हो सकता है। इसीलिए तो आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुए भी राष्ट्रीयता और समाज-सुधार की अपनी भावधारा को हिन्दी के द्वारा ही सारे देश में फैलाया। हिन्दी के महत्त्व को समझाते हुए उन्होंने कहा था—''हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।'' गुजरात प्रान्त के ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी के व्यापक रूप को समझाते हुए देशवासियों को उद्‌बोधित किया था—''जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी में बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते हैं वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को भारतमाता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं, इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।'' महाराष्ट्रीय होते हुए लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने भी हिन्दी की व्यापकता को प्रमाणित करते हुए कहा था—''मेरी समझ में हिन्दी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए। जब एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से मिले, तो आपस में विचार-विनिमय का माध्यम हिन्दी ही होनी चाहिए।'' राजा राममोहनराय का कथन है—''हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।'' चक्रवर्ती राज गोपालाचारी ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए कहा था—''हिन्दी का शृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है।'' हिन्दी व्यापकता को स्वीकार करते हुए भाषा-वैज्ञानिक डॉ० गियर्सन ने कहा था—''हिन्दी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।''

उपर्युक्त विभिन्न विचारकों, सुधारकों एवं नेताओं के विचारों से यह स्पष्ट है कि राष्ट्र की अखण्डता एवं एकता में हिन्दी का योगदान निरन्तर रहा है और भविष्य में भी रहेगा। स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पूर्व प्रत्येक देशवासी के हृदय में राष्ट्र के प्रति जितना अनुराग था उतना ही अनुराग राष्ट्र की भाषाओं के प्रति भी था, विशेष रूप से हिन्दी के प्रति। परन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद धीरे-धीरे राष्ट्र-प्रेम कम होता गया और स्वार्थ बढ़ता गया उसी प्रकार से हिन्दी-प्रेम की कुछ मात्रा में कम हुआ है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद यह प्रश्न उठा कि सरकारी कामकाज की भाषा अर्थात् राजभाषा हिन्दी को बनाया जाए या नहीं और राजनेताओं ने यह निर्णय लिया कि 1965 तक राजभाषा अंग्रेजी को रहने दिया जाए, तब तक हिन्दी में पूरे देश में कुशलता अर्जित कर ली जाएगी और वह कुशलता पूरे देश में आज तक भी अर्जित नहीं हो पाई है और परिणाम स्वरूप भारत की राजभाषा वास्तव में आज भी हिन्दी की बजाय अंग्रेजी ही अधिक है। हमारे राजनेताओं की हिन्दी के सम्बन्ध में यह सबसे बड़ी भूल थी कि उसे स्वतन्त्रता-प्राप्ति के तुरन्त बाद राजभाषा पद पर आरूढ़ नहीं किया गया अर्थात् सरकारी कामकाज के लिए हिन्दी को अनिवार्य रूप से लागू नहीं किया गया। हमारे समक्ष उदाहरण है जिस दिन तुर्की देश स्वतन्त्र हुआ था उसके अगले दिन वहाँ तुर्की भाषा अनिवार्य रूप से लागू कर दी गई थी, हमारे देश में नियमों के अनुसार तो लगभग पूरे देश की राजभाषा हिन्दी है, परन्तु देश के विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, न्यायालयों, उच्च न्यायालयों, सर्वोच्च न्यायालय और सभी विभागों के कार्यालयों में अंग्रेजी का वर्चस्व है और निरन्तर बढ़ता जा रहा है। या यों कहिए कि अंग्रेजी भाषा की परतन्त्रता बढ़ती जा रही है।

देश के राजनेता, उच्चाधिकारी और धनी वर्ग तो भाषा की गुलामी अपने स्वार्थ के लिए, अपने भोग-विलास के लिए स्वेच्छा से भोग रहे हैं, पर यह वर्ग राष्ट्र की जनसंख्या का एक प्रतिशत भी नहीं है। शेष 99 प्रतिशत जनसंख्या विवशतावश इस गुलामी को भोग रही है। राजनेता, उच्चाधिकारी तथा धनी वर्ग ही इस देश का शासक वर्ग है, वही शोषक वर्ग है, शेष राष्ट्र शासित और शोषित है। यह शासक वर्ग का षड्यन्त्र ही है, जो उसने सम्पूर्ण राष्ट्र में अंग्रेजी का प्रभुत्व स्थापित कर रखा है। इनके हृदय में न देशप्रेम है, न मानव प्रेम और न ही भाषा-प्रेम है। पहले इस देश के धन को लूटकर अंग्रेज ले जाते थे, अब ये लोग इस देश के धन को लूटकर विदेशों में जमाकर रहे हैं। अपने कुचक्र को चलाने के लिए विदेशी भाषा अंग्रेजी को अपने वर्चस्व का साधन बना लिया है तथा जनसाधारण के लिए विवशता। ये बड़े लोग अंग्रेजी को बड़ा मानते हैं, इसीलिए छोटे लोग भी अंग्रेजी को बड़ा मानने के लिए मजबूर हो रहे हैं। उन्होंने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है या ऐसा दिखावा उत्पन्न कर दिया है कि प्रत्येक भारतीय को रोटी के लिए या जीवन जीने के लिए अंग्रेजी की गुलामी करनी पड़ेगी।

भाषा के सम्बन्ध में भारत के लगभग सभी लोग अपना स्वाभिमान खो चुके हैं या खोते जा रहे हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इस महत्त्वपूर्ण कथन को भी भुला दिया लगता है—''**निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल॥**'' अब स्थिति उल्टी होती जा रही है। लगता है भारतीयों के हृदय का शूल अंग्रेजी के बिना नहीं मिट पा रहा है। तभी तो भारत का व्यक्ति अंग्रेजी में हस्ताक्षर करके, अपने घर के सामने नामपट्ट अंग्रेजी में लगाकर, दुकान का नामपट्ट अंग्रेजी में लगाकर, पत्र नहीं तो कम से कम पता अवश्य अंग्रेजी में लिखकर, विवाह नामकरणादि के निमन्त्रण-पत्र तथा नववर्ष के बधाई-पत्र आदि अंग्रेजी में छपवाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है, अपने को पढ़ा-लिखा मानता है अथवा यह सोचता है कि आवश्यक न होने पर भी व्यवहार में, लिखने में, बोलने में अथवा किसी न किसी रूप में अंग्रेजी का दामन थामे रखने से ही अपने स्तर की और अपने अस्तित्व की रक्षा हो सकती है। मां-बाप अपने बच्चों से माता-पिता कहलवाना पसन्द नहीं करते अपितु मम्मी-पापा कहलवाने में गौरव अनुभव करते हैं तथा मम्मा और डैड कहलवाकर और भी ऊँचे हो जाते हैं। थोड़ी पढ़ी-लिखी महिला भी यह कहना पसन्द नहीं करती कि यह मेरे पति हैं अपितु यह कहकर प्रसन्न और सन्तुष्ट होती है—यह मेरे हसबैंड हैं।

जिस विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाती है वह विद्यालय अच्छा नहीं माना जाता अपितु उसकी तुलना में वह विद्यालय अच्छा माना जाता है जहाँ अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है और वह विद्यालय और भी अच्छा

शेष पृष्ठ 7 पर....

महर्षि का काशी धाम का सप्तम व अन्तिम शुभागमन

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

दानापुर में धर्म-वृक्ष को उपदेशामृत से सिंचन करके, महर्षि जी कार्तिक सुदी चतुर्दशी 1936 तदनुसार सन् 1879 में प्रस्थान कर उसी दिन काशी धाम में सुशोभित हुए। काशी धाम में उनका यह शुभागमन सप्तम और अन्तिम था। पण्डित भीमसेन जी के नाम से एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ और काशी के कोने-कोने में लगाया गया कि श्रीमद्दयानन्द सरस्वती, यहाँ पधार कर, विजयनगर के आनन्द उद्यान में विराजमान हैं। वे मूर्तिपूजा और पुराणों का प्रबल खण्डन करते हैं। इनको वेद-विरुद्ध सिद्ध कर दिखलाते हैं। जो पण्डित इनको वेद-विरुद्ध नहीं हैं, सिद्ध करने का सामर्थ्य रखता हो वह स्वामी जी के सामने आकर शास्त्रार्थ कर ले।

जब इस विज्ञापन पर किसी महामहोपाध्याय की निद्रा न टूटी तो चौगुने बल से दूसरा विज्ञापन निकाला गया। पण्डित लोग घरों में बैठे तो बहुतेरी ढींगें मारते, परन्तु शास्त्रार्थ करने का नाम तक न लेते। जैसे कदली-कुंज को कदम-मर्दन करने वाले कुञ्जर, केसरी की गर्जना सुनकर चिंघाड़ते अवश्य हैं, परन्तु बल के कारण नहीं, प्रत्युत भय से, ऐसे ही शास्त्रीजन स्वामी जी के सिंहनाद को कम्पित होकर चिल्लाते तो बहुत थे, परन्तु उस नरसिंह के समीप आने का साहस नहीं करते थे।

श्रीमान् कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवट्स्की तीन चार साथियों सहित श्री महाराज के दर्शन करने के लिए मार्गशीर्ष सुदी 2 सं० 1936 को काशी में आए। उनके आगमन के पश्चात् दूसरे दिन राजा शिवप्रसाद भी वहाँ आ गये। स्वामी जी से थोड़ी देर तक बातचीत करने के अनन्तर, वे आल्काट महाशय और मैडम से मिले। श्री अल्काट और मैडम, स्वामी जी के सत्संग में बैठकर ज्ञानचर्चा और योग-वार्ता का आनन्द उपलब्ध किया करते थे।

स्वामी जी ने जब देखा कि शास्त्रार्थ के लिए तो काशी का कोई पण्डित समुद्यत नहीं हुआ तो उन्होंने उपदेश देने का विचार कर लिया। पं० भीमसेन जी की ओर से विज्ञापन निकाला गया कि मार्गशीर्ष सुदी 7 सम्वत् 1936 को, बंगाली टोला अन्तर्गत पुत्री पाठशाला में, स्वामी जी का व्याख्यान होगा और अल्काट महाशय भी भाषण करेंगे। व्याख्यान के विज्ञापनों को देखकर काशी के कुछ मनुष्यों ने एक निन्दनीय नीति का आश्रम लिया। उन्होंने कलेक्टर महाशय को जाकर कहा कि ''यदि स्वामी का भाषण हुआ तो काशी में शान्ति भंग हो जायेगी।''

जिन स्वामी जी ने इने-गिने संगी-साथी थे, वे सारे नगर की जनसंख्या के साथ लड़-भिड़कर शान्ति भंग कैसे कर देंगे, इस पर कुछ भी ध्यान दिये बिना, कलेक्टर महाशय ने आज्ञा-पत्र लिखकर ठीक उस समय स्वामी जी के पास पहुँचाया, जब वे पुत्री पाठशाला के द्वार पर पहुँचे। उसमें लिखा था कि काशी में कोई वाद अथवा व्याख्यान न कीजिए।

कलेक्टर महाशय की आज्ञा पर 'पायोनियर' समाचार-पत्र ने अपने पौष बदी 2 सं० 1936 के अंक में जो टिप्पणी की थी उसका सारांश यह है—हमें निश्चय था कि भारत के शासक जन किसी के धर्मप्रचार में हस्तक्षेत्र नहीं करते। दिल्ली की घोषणा का भी यही सार-मर्म है। परन्तु आज यह बात विचारणीय है कि ब्रिटिश शासन में हमको धार्मिक स्वतन्त्रता है भी कि नहीं? देखिए, एक संन्यासी जिसकी विद्या में किसी को एतराज तक करने का अवकाश नहीं है, वह लगातार पाँच वर्षों से नगर-नगर में चक्कर लगाकर वेदों का प्रचार करता है, वह केवल एक परब्रह्म की उपासना करने का उपदेश देता है। उसने युक्ति प्रमाणों से सिद्ध कर दिया है कि मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है। जो बुरी-बुरी रीतियां आर्यावर्त और आर्यजाति को बिगाड़ रही हैं, उनको वह हटाता है। वह अपने देशवासियों के सुधार के लिए रात-दिन लीन रहता है। आज जो भारत के युवकों में उन्नति की उच्चाकांक्षा पाई जाती है, यह उसी के उपदेशों का प्रताप है। वर्तमान शासन के विरुद्ध आन्दोलन करने की उसने कभी इच्छा नहीं की। उसने तो अपने भाषणों में कई बार कहा है कि यह शोभा ब्रिटिश राज्य को ही प्राप्त है कि किसी के मत में विघ्न-बाधा नहीं डाली जाती। वह महापुरुष आर्यसमाज का संस्थापक, आचार्य दयानन्द सरस्वती हैं।

उन्होंने काशी में पधारकर विज्ञापनों द्वारा धर्म का आन्दोलन उत्पन्न कर दिया। स्वार्थी लोग उसका विरोध करने के लिए इतने तुले कि कलेक्टर को कहकर उनका व्याख्यान बन्द करा दिया। इस बात की व्याख्या करना व्यर्थ है कि एक योरोपीय मजिस्ट्रेट ने, उनके व्याख्यान बन्द करके एक भारी भूल की है। निस्संदेह, कलेक्टर 'वाल' महाशय विचारने पर स्वयमेव अनुभव करेंगे कि उन्होंने इस कार्यवाही से, इस युग के अत्यन्त विद्वान्, योग्य, महात्मा के हृदय को ठेस पहुँचाई है।

वाल महाशय की उस आज्ञा पर और भी अनेक पत्रों ने कड़ी समालोचना की और उनके कर्म को सर्वथा अनुचित ठहराया। अन्त में किसी ऊपरी दबाव से अथवा अपने पिछले किये को अनुचित जानकर, 'वाल' महाशय ने मार्गशीर्ष सुदी 14 सं० 1936 को स्वामी जी की सेवा में पुलिस के इन्सपेक्टर को भेजकर सूचित किया, ''जब आप अपने निश्चयानुसार धर्मप्रचार करने में स्वतन्त्र हैं।'' इसके पश्चात् वाल महाशय आप स्वामी जी से मिलें और अपने आज्ञापत्र के विषय में कहने लगे, यह सब आपकी रक्षा के निमित्त किया गया था। एक तो मुहर्रम के दिनों में आपका व्याख्यान देना, अपने जीवन को जोखिम में डालना था। दूसरे काशी के बहुत बड़े सम्भ्रान्त व्यक्ति ने हमें कहा था कि यदि स्वामी जी व्याख्यान देंगे तो अवश्य शान्ति भंग हो जायेगी।

स्वामी जी ने 'वाल' महाशय से कहा, ''आप राजपुरुष हैं। प्रबन्ध करना आपका कर्त्तव्य है। जब आपको ज्ञात हुआ था कि कुछ लोग गड़बड़ करना चाहते हैं तो आप इन्हें डांट मारते और व्याख्यान-स्थान पर पुलिस का प्रबन्ध करते। परन्तु आपने व्याख्यान ही बन्द कर दिया।'' 'वाल' महाशय ने अपनी भूल स्वीकार की और आगे को सावधान रहने का वचन दिया।

कहा जाता है कि प्रान्तीय गवर्नर महोदय ने 'वाल' महाशय से उत्तर मांगा था कि तुमने स्वामी जी के व्याख्यान को क्यों बन्द किया था? व्याख्यान करने की पाबन्दी उठा दी गई, परन्तु स्वामी जी फाल्गुन सुदी नवमी सं० 1936 तक अपने स्थान पर ही सत्संग लगाते रहे। धर्म्माभिलाषी जन वहीं आकर आनन्द उठाते थे। फाल्गुन सुदी दशमी सम्वत् 1936 से लक्ष्मी कुण्ड पर, साँझ के सात बजे से नौ बजे तक प्रतिदिन, स्वामी जी के धुआँधार व्याख्यान होने लगे। इन व्याख्यानों में उन्होंने मिथ्यामूलक मन्तव्यों का बलपूर्वक खण्डन किया। चैत्र सुदी छठ को जब व्याख्यान-माला समाप्त हुई तो उसी दिन आर्यसमाज की शुभ स्थापना कर दी गई।

स्वामी जी के व्याख्यानों से एक बार तो काशी हिल गई थी। जहाँ जाओ, वहीं व्याख्यानों की चर्चा सुनाई देती। उपदेशों में पण्डित लोग दल बांधकर आते, परन्तु शास्त्रार्थ और प्रश्नोत्तर करने के लिए एक भी समुद्यत न होता।

इस लेख को पढ़ने से हमारे मन में दो विचार उभरकर आते हैं, जो इसी भाँति हैं—

(1) महर्षि दयानन्द जब पहले काशी नगर में सन् 1869 में आये थे, तब काशी के पौराणिक विद्वानों से स्वामी का शास्त्रार्थ ''वेदों में मूर्तिपूजा नहीं है'' विषय पर हुआ था। तब यहाँ के विद्वानों ने मूर्तिपूजा वेदों में है, यह सिद्ध नहीं कर सके थे और स्वामी जी की विजय हुई थी, पर छल-बल और गुण्डे-बदमाशों के सहारे उन्होंने काशी के महाराजा ईश्वरीनारायण सिंह से विजय की घोषणा करवा दी थी। पर इस लेख से यह सिद्ध होता है कि उस शास्त्रार्थ में स्वामी जी की ही विजय हुई थी। यदि पराजय होती तो इस बार स्वामी जी इतना ललकार कर शास्त्रार्थ करने की घोषणा नहीं करते।

(2) इस लेख में इन्सपेक्टर 'वाल' महोदय ने गलत निर्णय लेकर स्वामी जी को प्रवचन करने से रोका जिसका भारी विरोध समाचार-पत्रों व आम लोगों द्वारा हुआ, जिसके कारण 'वाल' महोदय को स्वामी जी से क्षमा मांगनी पड़ी। इससे सिद्ध होता है कि उस समय स्वामी जी के प्रवचनों का जनता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ने लगा था। यदि ईश्वर की कृपा से स्वामी जी बीस वर्ष और जीवित रह जाते और चारों वेदों का हिन्दी में भाष्य कर पाते तो केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व वैदिकधर्मी बन जाता और स्वामी जी अपने जीवन में ही अपने विचारों को साकार होते देख पाते।

www.thearyasamaj.org

दृढ़-संकल्प

-: वेद-मन्त्र :-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

(यजुर्वेद 19/30)

शब्दार्थः-(व्रतेन) संकल्प करने से, (दीक्षाम्) अधिकार को, (आप्नोति) प्राप्त करता है, (दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्) अधिकार का प्रयोग करके मनुष्य धन-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है, (दक्षिणा श्रद्धाम् आप्नोति) धन-प्रतिष्ठा से लक्ष्य के प्रति दृढ़ता व रुचि बढ़ती है और (श्रद्धया सत्यम् आप्यते) उस श्रद्धा से सत्य को प्राप्त किया जाता है।

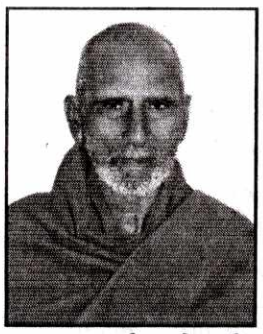

पूज्य आचार्य बलदेव जी

भावार्थ—वेद मन्त्र में अन्तिम सत्य तक पहुंचने के लिए चार श्रेणियां बताई गई हैं। इनको क्रम से प्राप्त करके ही व्यक्ति अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुंच सकता है। पहली श्रेणी है संकल्प-प्रतिज्ञा—किसी भी कार्य को करने का मन में दृढ़ निश्चय। छोटा हो या बड़ा, किसी भी कार्य को सम्पादित करने के लिए मन में उसके प्रति तीव्र इच्छा उत्पन्न होनी आवश्यक है। मैं इस कार्य को अवश्य ही करूंगा चाहे कितनी ही बाधायें, कष्ट, अभाव क्यों न आवें। मैं भूखा-प्यासा रहकर भी इस कार्य को पूरा किये बिना चैन की श्वास नहीं लूंगा। ऐसी प्रतिज्ञा होनी आवश्यक है। अपने लक्ष्य को वह भूलता नहीं है उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-फिरते, सेवा आदि कार्य को गौणरूप में करते हुए उसके मन मस्तिष्क में लक्ष्य छाया रहता है। ऐसी प्रतिज्ञा समूह में सार्वजनिक रूप में की जाए तो अधिक दृढ़ता आती है। लोग भी उसे याद दिलाते रहते हैं। वह अपने संकल्पों से हटता नहीं है, उन्हें भूलता भी नहीं है।

वेद में अनेकत्र ऐसा निर्देश किया गया है कि व्यक्ति शुभ-कर्मों कर्त्तव्य कर्मों को करने का संकल्प धारण करे क्योंकि जो संकल्प से रहित है वह मनुष्य ही नहीं है, बल्कि पशुवत् है। पशुओं के जीवन में किसी कार्य को करने का न कोई संकल्प होता है, न कोई नीति-नियम होता है।

जिसने किसी कार्य को करने का मन में संकल्प कर लिया है चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक या सामाजिक या फिर राष्ट्रीय उसके लिए इस संसार में कोई भी कार्य कठिन नहीं है और बिना व्रत के छोटा-सा कार्य भी सरल नहीं होता है। यद्यपि किसी भी क्षेत्र में उन्नति करने हेतु अनेक संसाधनों की अपेक्षा होती है। किन्तु उन सब में प्राथमिक तथा मुख्य साधन के रूप में दृढ़ संकल्प होना चाहिए। जब कोई दृढ़ संकल्प कर लेता है तो उसको उस कार्य को पूरा करने के लिए अन्यों से अधिकार भी मिलते हैं और अधिकार को प्राप्त करके जो व्यक्ति अपने पूर्ण पुरुषार्थ, तपस्या, त्यागपूर्वक परिश्रम करता है तो उसे दक्षिणा मिलती है, लोगों से सम्मान मिलता है, पुरस्कार मिलते हैं, अन्य लोग भी उसका समर्थन करते हैं, उसके साथ हो जाते हैं, उसकी सर्वत्र जय-जयकार होती है, उसकी सभी प्रशंसा करते हैं, गीत गाते हैं, पूजा-स्तुति करते हैं।

जब लोगों से, समाज से, जन-जन से, उसे इस प्रकार का सम्मान मिलता है तो अपने कार्यों के प्रति उसकी श्रद्धा, निष्ठा, प्रेम, विश्वास और अधिक बढ़ जाता है और व्यक्ति अपने उस संकल्पित कार्य को और अधिक पुरुषार्थ के साथ, तपस्या के साथ करता है। जिस कार्य के प्रति जितनी अधिक श्रद्धा होती है वह उस कार्य को उतनी ही अधिक तीव्रता से, दक्षता से, तन्मयता से, एकाग्रता से, रुचिपूर्वक करता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और सफल हो जाता है। लक्ष्य चाहे छोटा हो या बड़ा उसे प्राप्त करने के लिए यही प्रक्रिया है।

हे व्रतों के के स्वामी परमपिता! प्रत्येक शुभ कार्य के लिए हम मन में दृढ़ता से संकल्प धारण करें ऐसी प्रेरणा शीघ्र ही, आज ही प्रदान करो। उस संकल्प को हम कदापि न भूलें, न छोड़ें, न तोड़ें। आपके द्वारा सतत उत्साह, बल, साहस, पराक्रम, प्रेरणा, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करके, बिना रुके, बिना झुके, बिना भटके, बिना अटके सतत चलते रहें, विश्राम तभी करें जब लक्ष्य प्राप्त हो जाये।

—आचार्य बलदेव

आर्यसमाज के गौरवपूर्ण अतीत को स्वर्णिम भविष्य में बदल दें

गुजरातभर के आर्यों का चिंतन शिविर गाँधीधाम में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ

दिनांक 20 से 22 सितम्बर 2013 तक आर्यसमाज गाँधीधाम के सभागार 'वैदिक संस्कार केन्द्र' में गुजरात के 60 आर्यसमाजों के पदाधिकारियों व अंतरंग सदस्यों की चिंतन शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रेरित गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ) के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 125 प्रतिनिधि उपस्थित रहे थे।

अजमेर से पधारे पंडित रामस्वरूप जी ने आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या करते हुए कहा कि यह नियम मानवता के मंत्र समान है। जिसमें सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्त जीव, ईश्वर, प्रकृति, आर्यों के कर्तव्य, ईश्वर के गुण, धर्म की पहचान, आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य का विस्तृत मार्गदर्शन है।

श्री विनय आर्य जी (महामंत्री-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि आर्यसमाज का अतीत बडा ही गौरवपूर्ण रहा है, हम सब साथ मिलकर स्वर्णिम भविष्य बनाने का प्रयत्न करें। आर्यसमाज के पास विचारों की ताकत है और तर्क से निर्णय किया जाता है। आर्यसमाज के साथ जुड़ने से किसी का भी नुकसान नहीं हुआ है। उन्होंने आधुनिक युग के साथ नवीनतम टैक्नोलोजी से आर्यसमाज को जाड़ने और युवाओं को कार्य करने का अवसर देने का आह्वान किया।

ब्र. दिनेश जी (रोजड़) ने तीनों दिन यज्ञ करवाया और यज्ञ का महत्व, होने वाले लाभ, कर्मफल सिद्धान्त, ईश्वर का स्वरूप, सृष्टि की रचना जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

संगठन विस्तृतिकरण, कार्यालय के आधुनिकीकरण, सेवाकार्यों का विस्तार, व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिक उन्नति, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी, आर्यसमाज के नियम उपनियमों की जानकारी श्री हसमुखभाई परमार (महामंत्री प्रांतीय सभा गुजरात) ने दी। आर्यसमाज गाँधीधाम के महामंत्री श्री वाचोनिधि आचार्य ने आर्यसमाज के प्रबंधन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

शिविर की सफलता के फलस्वरूप जो नयी ऊर्जा का संचार हुआ है उनको बनाये रखकर प्रान्तीय सभा के संगठन को सक्षम व मजबूत बनाने की बात शिविराध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (प्रधान प्रान्तीय सभा, गुजरात) ने कही। शिविर के अन्तिम दिन पधारे महानुभावों का शॉल उढाकर सम्मान किया गया।

शिविर को सफल बनाने के लिए श्री हसमुखभाई परमार और आर्यसमाज गांधीधाम के पदाधिकारियों व ट्रस्टियों ने खूब मेहनत की।

—वाचोनिधि आचार्य,
महामन्त्री, 9428006232

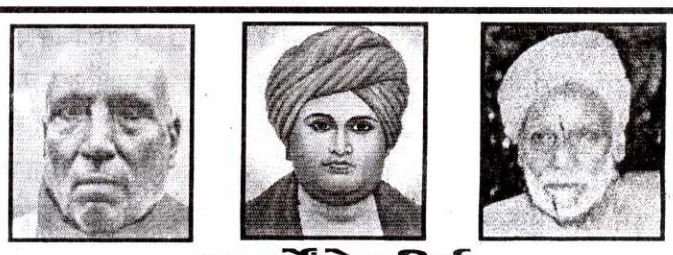

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर(पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

क्रान्तिकारी संन्यासी का राष्ट्रभक्त आर्यसमाज

❑ कन्हैयालाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आज से 138 वर्ष पूर्व (सन् 1875 ई०) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज की स्थापना इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। आर्यसमाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती इस देश में 19वीं शताब्दी में यदि न आते तो न ही देश इतनी शीघ्र स्वतन्त्र होता और न ही समाज से इतनी शीघ्रता से कुरीतियों (सामाजिक एवं धार्मिक) का उन्मूलन होता। कोई माने या न माने किन्तु आज भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षणिक तौर पर जो चहुँमुखी उन्नति दृष्टिगोचर हो रही है उसमें बहुत बड़ा भाग आर्यसमाज का है। देश को स्वतन्त्र कराने के लिए क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो भारतीयों के हृदयों में एक ऐसी ज्वाला का संचार किया जिसका अनुभव अंग्रेजी सरकार को इतनी अच्छी प्रकार हो गया था कि अंग्रेजी सरकार ने लन्दन को जो रिपोर्ट भेजी उसमें स्पष्ट लिखा था कि दयानन्द नाम का संन्यासी हमारी सरकार के विरुद्ध नवयुवकों के हृदयों में विद्रोह की अग्नि को भड़का रहा है, इस पर कड़ी निगाह रखने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती **'इदन्न मम'** की भावना लेकर आये थे। उन्होंने कोई नया मत न चलाकर पुरातन वैदिक संस्कृति को हमारे सम्मुख रखा। जो लोग महर्षि दयानन्द को गालियाँ देते थे महर्षि दयानन्द उनमें भी प्यार बाँटा करते थे। एक बार कुछ लोगों ने उन्हें बताया कि लोग नकली दयानन्द बनाकर उनके गले में जूतों का हार पहना रहे हैं, तब महर्षि ने कहा था कि नकली दयानन्द बनने वालों की यही हालत ही हुआ करती है। अत: हमें आज संकल्प करना होगा कि हम सच्चे दयानन्दी बनें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब अपने पूज्य गुरु स्वामी विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण कर ली तब वे अपने गुरु को दक्षिणा देने के लिए लौंग लेकर गये क्योंकि शिष्य जानता था कि गुरु को कौन-सी वस्तु अधिक अच्छी लगती है। परन्तु गुरु विरजानन्द ने अपने प्रिय शिष्य स्वामी दयानन्द से कहा था कि यदि तुम वास्तव में मुझे गुरुदक्षिणा देना चाहते हो तो आज से संकल्प करो कि वेदों का प्रचार करूँगा। वेद लुप्त प्राय: हो रहे हैं, उसके प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को लगा दोगे, तो मेरी शिक्षा सार्थक हो जायेगी। उसी दिन से देव दयानन्द ने यह निर्णय ले लिया कि वे वेदों के सच्चे स्वरूप को समाज के सम्मुख रखेंगे। संसार के इतिहास में ऐसे गुरु और शिष्य का उदाहरण मिलना कठिन है। गुरु के द्वारा ऐसी दक्षिणा मांगना और शिष्य के द्वारा इसी हेतु अपना जीवन अर्पित कर देना, ऐसा अनूठा उदाहरण विश्व के किसी भी इतिहास में सम्भवत: नहीं मिलेगा।

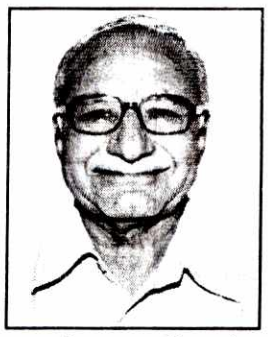

कन्हैयालाल जी आर्य

पौराणिक तथा विदेशी भ्रमित लोगों ने ये अनर्गल बातें प्रचारित कर रखी थीं कि वेद केवल गडरियों के गीत हैं। परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने यह सिद्ध कर दिया कि वेद सब विद्याओं का पुस्तक है और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का धर्म ही नहीं बल्कि परमधर्म बताया जबकि भारत के रूढ़िवादी समाज में उन दिनों वेदों को पढ़ना तो दूर, सुनना-सुनाना भी अपराध माना जाता था और प्रत्येक प्रकार की शिक्षा का मानवमात्र को अधिकार देना, इससे बढ़कर धार्मिक शिक्षा मानव समाज के लिए और क्या देन हो सकती है?

कुमारिल भट्ट और जगद्गुरु शंकराचार्य वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनकी योग्यता एवं वेद के प्रति श्रद्धा को शत-शत नमन। परन्तु उन्होंने भी 'स्त्रीशूद्रो न अधीयताम्' अर्थात् स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार न देकर वेदों की भावना को संकुचित कर दिया था। पौराणिकों ने तो यहाँ तक कह डाला था कि यदि शूद्र और स्त्रियाँ वेदों को सुन लें तो उनके कानों में सीसा घोलकर डाल दिया जाये, सुना दें तो उनकी जीभ काट ली जाये, परन्तु वाह रे मेरे प्यारे दयानन्द! वेदों के रखवाले दयानन्द! तुझे कोटि-कोटि नमन। तूने न केवल स्त्रियों और शूद्रों को बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति को वेद पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने का अधिकार दिलाकर मानव जाति पर वह महान् उपकार किया है जिसके लिए सम्पूर्ण मानव जाति उनके इस परोपकार के लिए कृतज्ञ रहेगी।

आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है, जो हमारे नवयुवकों को न केवल देशभक्ति की शिक्षा देती है बल्कि उन्हें माता, पिता, गुरुजनों का मान करना, पाखण्डों के विरुद्ध जागृत करने का भी काम करती है। नई पीढ़ी यदि इस पवित्र आर्यसमाज रूपी संगठन से नहीं जुड़ेगी तो वह बुरी संस्थाओं (पाखण्ड का प्रचार करने वाली) से जुड़ जायेगी तो उससे समाज का पतन निश्चित है। हम अच्छे लोग अच्छाई का प्रचार बहुत कम कर रहे हैं और बुरे लोग बुराई का प्रचार करने में दिन-रात जुटे हैं। यदि हम अच्छे लोगों ने अच्छाई के प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को नहीं लगाया तो हमें इतिहास कभी भी क्षमा नहीं करेगा।

आर्य किसी जातिविशेष का नाम नहीं है बल्कि एक संस्कृति-सभ्यता का नाम है। आर्य वह है जो जीवन में पुरुषार्थ भी करता है और शान्त भी रहता है। वह दु:ख में घबराता नहीं है और सुख में इतराता नहीं है। यदि हमें अपने जीवन में सुखी बनना है तो हमें सात्त्विक यज्ञ करने होंगे, सत्साहित्य का स्वाध्याय करना होगा। यह जो हम दैनिक यज्ञ करते हैं, उसके पीछे हमारी त्याग एवं परमार्थ की भावना होनी चाहिये। यदि यज्ञ दिखावे के लिए हो रहे हैं, स्वार्थ की भावना से हो रहे हैं तो इससे हमारे शरीर को लाभ तो अवश्य होगा परन्तु हमारी आत्मा को सन्तोष तो नि:स्वार्थ के कार्यों से ही मिलेगा। यही पवित्र भावना महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने संगठन आर्यसमाज के माध्यम से विश्व को देना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना की। सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने वाला व्यक्ति किसी पाखण्ड में नहीं फँस सकता। 'सत्यार्थप्रकाश' बन्द आँखों को खोल देता है। सत्य का प्रचार करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं। महर्षि ने 'सत्यार्थप्रकाश' में सत्य अर्थों का प्रकाश किया है। महर्षि ने आर्यसमाज के 10 नियमों में पहले 5 नियमों में सत्य की बात की है। इस जाति पर महर्षि दयानन्द के इतने उपकार हैं कि भुलाये नहीं जा सकते। स्त्रीशिक्षा, विधवा-विवाह, अछूत-उद्धार, शुद्धि-प्रचार-स्वभाषा हिन्दी प्रचार एवं स्वदेशी का मूल मन्त्र सबसे पहले देना ऐसे कार्य थे जिन्हें सामाजिक क्रान्ति कहा जा सकता है और आर्यसमाज एवं राष्ट्र आज भी उसके अनुकूल चलने का प्रयास कर रहा है। 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़कर हमारी सारी भ्रान्तियों का समाधान हो जाता है।

युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज नामक पवित्र एवं क्रान्तिकारी संगठन स्थापित कर एक महान् कार्य किया है। आज आर्यसमाज पूरे विश्व के लिए एक प्रकाशस्तम्भ का कार्य कर रहा है। अपने जन्म से लेकर आज तक इस पवित्र संस्था ने कुरीतियों के विरुद्ध जो संघर्ष किया है उसके लिए विश्व उनका सदा ऋणी रहेगा। आर्यसमाज एक बहुत बड़ा शक्तिशाली संगठन है। यह संगठन जब भी किसी कार्य को अपने हाथ में ले लेता है तो उसे पूरा करके ही रहता है। जब कॉमन वैल्थ खेलों में गोमांस परोसने सम्बन्धी सरकारी दुष्कृत्य का विरोध करने के लिए तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान, तपोमूर्ति आचार्य बलदेव जी की एक हुंकार ने केन्द्र सरकार के होश उड़ा दिये और केन्द्र सरकार को इस दुष्कृत्य को वापिस लेना पड़ा। आर्यसमाज के द्वारा चलाये गये इस आन्दोलन को पूरे धार्मिक जगत् से पूरा सहयोग मिला और अन्तत: सरकार को झुकना पड़ा। आर्यसमाज जब भी सर्वात्मना किसी भी अत्याचार के विरुद्ध उठाता है तो उसको समाप्त करके ही विश्राम करता है। सरकारें तो झुका करती हैं, झुकाने वाला होना चाहिये। जब भी आर्यसमाज ने किसी भी कुरीति के विरुद्ध मुँह खोला है उसे समाज ने न केवल सहर्ष स्वीकृति दी है बल्कि उस मन्तव्य को अपने जीवन का अंग बनाकर अपना लिया है।

आज ससार में भटकाने वाले बहुत हैं, मार्गदर्शक कम। तथाकथित संतों की बाढ़ आई हुई है लेकिन वास्तविक सन्त बहुत कम दिखाई देते हैं। आज दुनिया को महर्षि दयानन्द जैसे निर्मोही एवं अपना जीवन समाज के लिए आहूत करने वाले सन्तों की आवश्यकता है। एक ओर तो विज्ञान अपनी चरमसीमा पर है दूसरी ओर कुछ तथाकथित सन्त समाज को गुमराह करके लूट रहे हैं। समाज को इस लूट से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज को सबल बनाने की आवश्यकता है। आर्यसमाज सबल होगा तो पाखण्ड और भ्रम संसार से दूर हो जायेंगे और तथाकथित सन्तों एवं पाखण्डियों की दुकानें नहीं चलेंगी। समाज को स्वच्छ जीवन जीने की प्रेरणा मिलेगी, समाज वेदों की ओर लौटेगा तथा उन्नत होगा। प्रभु पाने का मार्ग सुलभ होगा। इसीलिए आर्यसमाज रूपी संगठन को सबल बनाना अनिवार्य है ताकि विश्व समाज भ्रमविहीन बनकर अपने जीवन को सार्थक कर सके।

संपर्क सूत्र—04/45, शिवाजीनगर, गुड़गांव, मो० 09911197073

उत्तर भारत में गोतस्करों का आतंक

❑ शमशेर नहरा, 397/22, दुर्गा कॉलोनी रोहतक मो० 9466385012

गतांक से आगे...

तथाकथित सेक्यूलर पार्टियों में अल्पसंख्यक के नाम पर मुस्लिम वोट हासिल करने की गला कॅाट प्रतियोगिता चल रही है। किसी भी कीमत पर सता पाने की भूख में मुस्लमानों को तुष्ट करने की नीति के चलते मुस्लमानों के उल्टे सीधे कामों को नजरअंदाज करके राष्ट्र की एकता, अखण्डता के साथ खिलवाड़ कर किया जा रहा है। फर्जी सेक्यूलरिस्टों ने सेक्यूलरिज्म की अजीब परिभाषा गढ़ ली है। उनकी नजर में पशु लुटेरे व पशु तस्कर सेक्यूलर हैं तथा पशुओं की लूट व पशु तस्करी का विरोध करने वाले नागरिक साम्प्रदायिक हैं।

मुस्लिमों के प्रति अतितुष्टीकरण के नाम पर सेक्यूलरिज्म का यही माडल आजादी आन्दोलन के दौरान गांधी जी ने अपनाया था जिसकी कीमत देश को बंटवारे के रूप में चुकानी पड़ी।

तथाकथित फर्जी सेक्यूलर नेताओं की अवैध बूचड़खाने चलाने वालों व पशु तस्करों की मिलीभगत के बिना देश में इतने विशाल पैमाने पर पशुओं की लूट, तस्करी व वध का सिलसिला जारी रखना संभव नहीं हो सकता। राजनेताओं के इसी रवैये के चलते अधिकतर पुलिस कर्मचारी व अधिकारी इन पशु लुटेरों, पशु तस्करों, पशुओं के साथ क्रूरता करने वालों व अवैध बूचड़खाने चलाने वालों से उलझने की बजाय माल बनाने में ही अपनी भलाई समझते हैं।

फर्जी धर्मनिरपेक्ष नेताओं की पशु तस्करों के प्रति संरक्षणवादी नीति के चलते ही आज पशु तस्करों के होंसले इतने बुलंद हो गये हैं कि अव्वल तो वे पुलिस नाकों व बार्डरों पर सरपंचों के फर्जी दस्तावेज दिखाकर व पुलिस को सुविधा शुल्क देकर निकल जाते हैं वर्ना वे पशु तस्करी का विरोध करने वाले नागरिकों, यहां तक कि पुलिस पर भी सीधी गाड़ी चढ़ाकर कुचल कर मारने से भी परहेज नहीं करते। पशु लुटेरे व तस्कर अपनी पिकअप गाड़ियों व कैंटरों में बाकायदा हथियारों के साथ चलते हैं। बड़ी मात्रा में रोड़े, पत्थर जमा रखते हैं उनको रोकने की कोशिश किये जाने पर बेरहमी से रोड़े, पत्थर, हथियारों से वार करते हैं। हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली में पशु तस्करों द्वारा नागरिकों व पुलिस पर सीधी गाड़ी चढ़ाने की दर्जनों वारदातें हो चुकी हैं जिनमें अनेक लोगों की जाने जा चुकी हैं तथा अनेक लोग अपंग हो चुके हैं। ऐसी ही एक घटना 2007 में भिवानी जिले में दादरी के पास हुई थी जिसमें गोतस्करों ने कितलाना गांव के दो युवाओं कुलदीप व बिजेन्द्र को पिक अप गाड़ी से कुचल कर मार दिया था। ताजा घटनाएं फरीदाबाद व गुड़गाँव में घटी हैं जिनमें फरीदाबाद में एक डेयरी से गाय लूटने जाये तस्करों ने विरोध करने पर दलीप नाम के 20 वर्षीय युवक को गोली से उड़ा दिया तथा गुड़गाँव के रब्बासपुर में पुलिस नाका तोड़कर भाग रहे गोतस्करों ने पीछा करने पर विक्रान्त यादव 22 वर्षीय युवक को बेरहमी से तलवार से काट दिया।

पूरे हरियाणा प्रदेश में अवैध रूप से पशुओं की चोरी, लूट व तस्करी के मामलों की बाढ़ सी आई हुई है। पुलिस विभाग में फैले भ्रष्टाचार के चलते अधिकतर पुलिस नाकों पर तैनात पुलिस कर्मचारियों के लिए ये पशु तस्कर सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी बन गये हैं।

2 जुलाई 2013 को करनाल में 25-30 भैंसों को पंजाब से ट्रक में ठूंस कर ले जा रहे पशु तस्कर ने इंडिया न्यूज चैनल के पत्रकार को बताया कि पुलिस के हर नाके पर 1000 रूपये 2000 रूपये देते है तथा पंजाब से हरियाणा के रास्ते यू पी बार्डर पार करने तक उनके 30 हजार रूपये खर्च हो जाते है। इंडिया न्यूज ने टी वी पत्रकार ने अपने चैनल को बताया कि करनाल से यू पी जाने वाले इस हाइवे पर रात के 1 बजे से 5 बजे तक हर आध घंटे के बाद बेजुबान गायों, भैंसों से बेरहमी से लदे ट्रक नाकों पर सुविधा शुल्क देकर आराम से गुजरते हैं।

प्रदेश में पशुओं की लूट व तस्करी की घटनाओं के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। जून, जुलाई 2013 में घटी कुछ ज्ञात घटनाओं का जिक्र करें तो 21 जून को फरीदाबाद के नेशनल हाइवे न 3 पर स्थित एक मन्दिर का ताला तोड़कर कसाई 4 गाय ले गये। 1 जुलाई की रात को करनाल में 25-30 भैंसों से लदा ट्रक मिडिया कर्मियों ने पकड़वाया। 2 जुलाई को भिवानी जिले के बहल कस्बे में गांवों वालों ने ट्रक में बुरी तरह ठूंस कर ले जा रहे 25 बैलों को कसाईयों से मुक्त कराया। 7 जुलाई की रात को 3 बजे भिवानी जिले के ही मानेहरू गांव के लोगों द्वारा रोके जाने पर कसाई 4 गायों को वाहन से उतार कर फायर करते हुए भाग गये। 14 जुलाई को पंजाब के मलेरकोटला में 3 गायों के ऊपर मुस्लिमों ने तेजाब डाल दिया गया। 20 जुलाई को अलीकां गऊशाला सिरसा में कसाईयों ने जहर खिलाकर 24 गायों की मौत की नींद सुला दिया। 21 जुलाई को सिरसा जिले के चतरगढ़पट्टी क्षेत्र में सुनसान जगह पर 24 गायों की हत्या कर हर तरफ गायों के सिर कटे शव पड़े मिले। सभी गायों को बेरहमी से मौत के घाट उतारा गया था। कसाई गायों की खाल उतार वहां फेंक गये। 23 जुलाई को रेवाड़ी पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर दो अलग-2 जगहों पर राजस्थान से हरियाणा के रास्ते यू पी ले जा रहे गायों से लदे दो कैंटरों को पकड़ा जिनमें बेरहमी से 37 गऊएं लदी हुई थी 8 की मौत हो चुकी थी। 23 जुलाई को दोपहर में गढ़ी सांपला जिला रोहतक में पशु खोलते हुए आधा दर्जन कसाईयों को ग्रामीणों ने रंगे हाथों पकड़ा तथा पुलिस के हवाले कर दिया। यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि पशुओं की लूट व तस्करी में शामिल अधिकतर लोग यू पी व मेवात से ही होते हैं।

लगातार हो रही पशुओं की लूट व तस्करी की वारदातों से किसी बड़ी हिंसक दुर्घटना की वारदात से इंकार नहीं किया जा सकता। लगता है हरियाणा सरकार व केन्द्र की सरकार ने झज्जर जिले के दुलीना में घटी हिंसक दुर्घटना से कोई सबक नहीं लिया है जिसमें 15 अक्तूबर 2002 झज्जर से शाम को दशहरा देखकर वापिस घरों को जा रही ग्रामीणों की भीड़ ने अनधिकृत स्थान पर मृत गाय की चमड़ी उतार रहे 5 चमड़ा कारोबारियों को गलती से गौहत्यारे समझकर पुलिस चौकी में ही मार दिया था और हरियाणा की बहादुर पुलिस जिला मुख्यालय के बिल्कुल समीप होने के बावजूद उस अप्रिय वारदात को नहीं रोक सकी। हरियाणा की भ्रष्ट व नाकारा पुलिस की संदेहास्द भूमिका के चलते घटी दुलीना कांड की घटना ने जहां अनधिकृत स्थान पर देर शाम मृत गाय की चमड़ी उतारने की नादानी कर रहे पांच बेकसूर नागरिकों की जान चली गई वहीं उनकी हत्या के आरोप में 7 ऐसे लोग आजीवन कारावास भोग रहे हैं जिनका कोई आपराधिक रिकार्ड नहीं था।

प्रदेश में पशुओं की लूट तस्करी व गोकशी की बेलगाम हो रही घटनाओं के लिए राज्य सरकार, पुलिस प्रशासन तो दोषी है ही अदालतें भी अभियुक्तों को समय पर सख्त सजा न देने पर कम जिम्मेवार नहीं है।

अदालतों व पुलिस का रवैया जहां पशु लुटेरों, पशु तस्करों व गौकशी करने वालों के प्रति नरम रहा है वहीं पशु लूट की वारदातों की जांच व बरामदगी व क्षतिपूर्ति के लिए आन्दोलन करने वाले पशु मालिकों के प्रति काफी कठोर है। 1947 से लेकर आजतक शायद ही किसी पशु लुटेरे, पशु तस्कर व गौकशी करने वाले की पुलिस ने अदालतों से कठोर सजा करवाई हो लेकिन पुलिस व अदालतों का रवैया पशु चोरी की वारदातों पर लगाम लगाने व बरामदगी को लेकर आन्दोलन करने वाले पशु पालकों के प्रति काफी कठोर है। गौ सेवकों , गौ रक्षकों व अन्य सामाजिकों संगठनों की मदद से पुलिस को पकड़ाये गए गौ तस्करों व पशु तस्करों को जमानती अपराध होने के कारण अदालतें फौरन जमानत दे देती है तथा वे बार-बार तस्करी का धंधा चलाते रहते है। यहां उल्लेखनीय है कि 20 दिसम्बर 2011 में महेन्द्रगढ़ जिले के पशुपालकों ने अनेक भैंसे चोरी होने की घटनाओं के चलते आन्दोलन स्वरूप रोड़ जाम किया तो पुलिस ने 1 व्यक्ति पर संगीन धाराएं लगाई जबकि 9 लोगों पर रोड़ जाम का मुकदमा कायम कर दिया। सैशन कोर्ट ने जून 2013 में आन्दोलनकारी को सात साल की कठोर कारावास व 7 अन्य आन्दोलनकारियों को 1-1 साल की सजा सुनाई। **क्रमशः**

आओ संगठित होकर आगे बढ़ें

❑ चाँदसिंह आर्य (चन्द्रदेव), महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर

गतांक से आगे....

16 जुलाई प्रातः आर.सी.एम. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एमपी माजरा, दोपहर राजकीय माध्यमिक विद्यालय वजीरपुर, दोपहर बाद रा० कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालन्द में कार्यक्रम दिए, सायंकाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा कार्यालय में बैठक में भाग लिया।

17 जुलाई प्रातः रा० कन्या व० मा० विद्यालय बालन्द में शिविर, दोपहर गरीबदासिया स्कूल करौंथा, दोपहर बाद रा० व० मा० विद्यालय, करौंथा में कार्यक्रम, तथा सायंकाल करौंथा में शिविर।

18 जुलाई प्रातः बालन्द शिविर दोपहर सभा कार्यालय रोहतक सायंकाल करौंथा शिविर तथा रात्रि खेड़ीजट में कार्यक्रम।

19 जुलाई प्रातः बालन्द शिविर, दोपहर रा०क०व०मा० विद्यालय करौंथा में कार्यक्रम, सायंकाल शिविर।

20 जुलाई प्रातः बालन्द शिविर यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के साथ समापन दोपहर रा० कन्या व० मा० विद्यालय करौंथा कार्यक्रम सायंकाल शिविर।

21 जुलाई आर्यवीर दिल्ली प्रदेश के पदाधिकारियों के साथ रोहतक में बैठक, सायंकाल करौंथा शिविर का समापन यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

22 जुलाई रा०व०मा० विद्यालय कबलाना में गुरुपूर्णिमा पर्व के अवसर पर कार्यक्रम किया तथा अनेक विद्यालयो में सम्पर्क किया।

23 जूलाई आनन्द मोहन उच्च विद्यालय झज्जर में कार्यक्रम किया तथा शहर के अनेक विद्यालयों में सम्पर्क किया।

24 जुलाई सनराईज स्कूल झज्जर में कार्यक्रम, झज्जर शिविर हेतु सम्पर्क किया।

25 जुलाई बालाजी कोचिंग सेंटर झज्जर में कार्यक्रम व शहर में शिविर हेतु सम्पर्क अभियान।

26 जुलाई कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में रा० उच्च विद्यालय तलाव में व०रा०व०मा० विद्यालय मारोत में कार्यक्रम दिया।

27 जुलाई रा०व०मा०वि० झज्जर व रा०उ० विद्यालय में कार्यक्रम तथा सायंकाल धर्म-पलैस झज्जर में शिविर लगाया, जिसमें 250 के लगभग शिविराथियों ने भाग लिया।

28 जुलाई दोनों समय धर्म-पलैस में शिविर दिन में पाकिस्तान से आए 20 हिन्दुओं की व्यवस्था व प्रशिक्षण।

29 जुलाई दोनों समय शिविर दिन में पूर्वकालिक शिविरार्थियों को प्रशिक्षण।

30 जुलाई दोनों समय शिविर पलैश में पूर्वकालिक शिविरार्थियों को प्रशिक्षण।

31 जुलाई शहीद ऊधमसिंह शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम सायंकाल शिविर का समापन, यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार, व्यायाम प्रदर्शन एवं पौधे वितरण कार्यक्रम।

1 अगस्त 2013 बाबा मोजमा मन्दिर डीघल में 15 किलो घी का यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार, सायंकाल शाहजहांपुर में शिविर लगाया।

2 अगस्त—प्रातः रा०व०मा० वि० व रा० प्राथमिक विद्यालय डावला में कार्यक्रम तथा सायंकाल शिविर प्रारम्भ जिसमें 350 के लगभग शिविरार्थियों ने भाग लिया।

3 अगस्त—प्रातः रा०व०मा० वि० हसनपुर में कार्यक्रम, दोपहर रा० प्राथमिक विद्यालय कोंधरवाली में कार्यक्रम, दोपहर बाद बैठक गुरुकुल झज्जर, सायंकाल डावला शिविर।

4 अगस्त—सभा कार्यालय कार्य रोहतक मासिक सत्संग सायंकाल डावला शिविर।

5 अगस्त—प्रातः शाहजहांपुर शिविर समापन, यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार सायंकाल डावला शिविर का भी समापन यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

6 अगस्त—प्रातःकाल देवीलाल भवन झज्जर में शिविर यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार एवं धर्मचर्चा।

7 अगस्त—रा०व० विद्यालय सिलानी में कार्यक्रम दिया फिर दादनपुर, माछरौली, खूडण, कासणी, हसनपुर, सुरहेती आदि गांव में सम्पर्क संवाद किया।

8 अगस्त—प्रातः रा०व०मा०वि० कासनी, दोपहर जीनियस स्कूल हसनपुर, दोपहर बाद रोहतक सभा कार्य सायंकाल कासनी में शिविर प्रारम्भ।

9 अगस्त—प्रातः सुरहेती गोशाला में यज्ञ सायंकाल कासणी शिविर। महात्मा रामभिक्षु साथ।

10 अगस्त—प्रातः एमआर व० मा० वि० हसनपुर, दोहपर एसआर स्कूल दोपहर बाद ज्ञान ज्योति स्कूल डावला तथा सायंकाल कासनी शिविर समापन यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

शेष अगले अंक में....

प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन

12-13 अक्तूबर, (शनिवार-रविवार) 2013

स्थान : अग्रवाल पब्लिक स्कूल तिगाँव रोड, सैक्टर-3 बल्लभगढ़, फरीदाबाद

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा का प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन 12-13 अक्तूबर 2013 को **फरीदाबाद** में किया जा रहा है। इस अवसर पर **आचार्य बलदेव** जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा, **डॉ० देवव्रत सरस्वती** प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, **आचार्य विजयपाल** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, **ब्र० राजसिंह आर्य** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, **डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार** महामंत्री आर्य वीर दल, **डॉ० योगानन्द जी शास्त्री** स्पीकर दिल्ली विधान सभा, **प्रो० ओमकुमार आर्य, रामचन्द्र जी बैन्दा पूर्व सांसद, चौ० हरिसिंह सैनी** हिसार तथा अनेक विद्वान् संन्यासी एवं राजनैतिक एवं सामाजिक नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

दिनांक 12.10.2013 प्रातः 10 बजे संस्कृति रक्षा सम्मेलन
दोपहर 1 बजे शोभायात्रा
आर्यवीर सम्मेलन : रात्रि 8 बजे
दिनांक 13.10.2013 सामूहिक शाखा प्रातः 6 बजे
यज्ञ एवं प्रवचन प्रातः 8 बजे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन प्रातः 10 बजे से तथा व्यायाम सम्मेलन : 1 बजे

कृपया पधारकर सम्मेलन को सफल बनायें।

भवदीय : वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा

आर्यसमाज पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का चौथा भव्य वार्षिक उत्सव

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्यसमाज पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का **चौथा भव्य वार्षिक उत्सव दिनांक दिनांक 4 अक्तूबर से 6 अक्तूबर 2013** तक उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस सम्मेलन में अनेक विख्यात संन्यासी, विद्वान् आर्यनेता, भारत के राजनेता एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप भी इष्ट-मित्रों सहित कार्यक्रम में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें। **—महाशय गुरुदत्त आर्य, 9253056904**

आर्यसमाज बनौंदी जिला अम्बाला का निर्वाचन

प्रधान-श्री निर्मलसिंह, उपप्रधान-श्री अशोक कुमार, मंत्री-श्री रघुवीर सिंह, उपमंत्री-श्री रमेशचन्द्र, कोषाध्यक्ष-श्री रूपेन्द्रसिंह, उपकोषाध्यक्ष-श्री बलविन्द्रसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-श्री संजीव कुमार, आडिटर-श्री बलवीरसिंह, संरक्षक-श्री रामरतन, प्रचारमंत्री-श्री नायब सिंह, संगठनमंत्री- भूपिन्द्र सिंह, उपसंगठन मंत्री-श्री राजेश कुमार।

—रघुवीर सिंह, मंत्री, आर्यसमाज बनौंदी जिला अम्बाला

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्ष भगवती कन्या गुरुकुल जसात, गुड़गांव	28 से 29 सितम्बर 2013
2.	वार्षिक महोत्सव, आर्यसमाज महेन्द्रगढ़	28 से 29 सितम्बर 2013
3.	आर्यसमाज जांट (रेवाड़ी)	2 अक्तूबर 2013
4.	आर्यसमाज पालिका कालोनी, भिवानी रोड, रोहतक	4 से 6 अक्तूबर 2013
5.	आर्यसमाज बेगा, जिला सोनीपत	2 से 4 अक्तूबर 2013
6.	आर्यसमाज जलियावास, जिला रेवाड़ी	5 से 6 अक्तूबर 2013
7.	आर्यसमाज गोहानामण्डी, जिला सोनीपत	9 से 13 अक्तूबर 2013
8.	आर्यसमाज बीगोपुर, जिला महेन्द्रगढ़	12 से 13 अक्तूबर 2013
9.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 101वां वार्षिकोत्सव	25 से 27 अक्तूबर 2013
10.	ओम् साधना मण्डल, करनाल	16 से 17 नवम्बर 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य-संसार

जन्मदिवस पर यज्ञ व वेदोपदेश

25 अगस्त 2013 को खोखरा कोट रोहतक में बृहद् संस्कार कार्यक्रम हुआ। संस्कार यज्ञ के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में ब्रह्मयज्ञ हुआ। यज्ञ में अनेक शिक्षित आर्य तथा इंजीनियरिंग के छात्र भी उपस्थित हुए। आचार्य जी ने बताया कि चित्त में अनेक अच्छे-बुरे संस्कारों के साथ बालक जन्म लेता है। धार्मिक व विद्वान् माता-पिता तथा आचार्य अच्छे संस्कारों को उद्बुद्ध कर देते हैं। क्रोध द्वेष के संस्कारों को विद्या व तप से दूर करा देते हैं। इसी कारण गुरुकुलों में जब तक भारतवासी पढ़ते थे तब तक बलात्कार, चोरी, डकैती, बेईमानी नहीं थी। आज कठोर सजा होते हुए भी 5 वर्ष की कन्या भी भयग्रस्त है। थानेदार जगदीश मलिक के पौत्र आदित्य को आशीर्वाद आगन्तुकों ने दिया।

इसी प्रकार श्री प्रदीप गांव मदीना के पुत्र आलोक का जन्म दिन 27 अगस्त को मनाया गया। आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सर्वप्रथम बृहद् यज्ञ किया गया। यज्ञ में स्त्री-पुरुषों के अतिरिक्त युवा समिल्लित हुए। आचार्य जी ने बालकों में वैदिक संस्कार डालने के लिए घर-घर यज्ञ व उपदेश कराने की परामर्श दिया। केवल धार्मिक संस्कार वाला माता-पिता तथा राष्ट्र का सेवक बन सकता है।

—मनोज आर्य, आर्यपुर, रोहतक

आर्यसमाज के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री नहीं रहे

आर्यसमाज के प्रसिद्ध महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री का आकस्मिक देहान्त दिनांक 22.9.2013 को सायं 6.30 बजे हो गया। वे 90 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्टि-संस्कार 23 सितम्बर 2013 को उनके पैतृक गाँव आसन जिला रोहतक में पूर्णतया वैदिक रीति से किया गया। सभा की तरफ से सभा के संरक्षक आचार्य बलदेव जी भी अन्तिम संस्कार पर मौजूद थे। चिता को मुखाग्नि उनके बेटे श्री प्रकाशवीर हुड्डा ने दी।

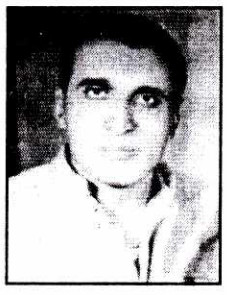

श्री शास्त्री जी का सारा जीवन आर्यसमाज को समर्पित रहा। उन्होंने सरकारी अध्यापक की सेवानिवृत्ति के पश्चात् सभा में महोपदेशक के रूप में कई वर्षों तक कार्य किया। उसके पश्चात् दयानन्दमठ में रहे तथा वहाँ पर भी यज्ञ आदि का कार्य निरन्तर करते रहे। वृद्धावस्था के कारण उनका बेटा प्रकाशवीर उनको फरवरी 2013 से अपने पास ले गया तथा उनकी सेवा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार को इस विकट दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

उनकी श्रद्धाञ्जलि दिनांक 2 अक्तूबर 2013 को उनके निवास-स्थान ग्राम आसन, जिला रोहतक में सुबह 9 बजे होगी।

—सत्यवान आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आवश्यकता

- गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) में एक प्रशिक्षित विज्ञान अध्यापक की आवश्यकता है।
- सेवामुक्त अध्यापक को प्राथमिकता दी जायेगी।
- वेतन आदि का निर्णय योग्यता एवं अनुभव के आधार पर गुरुकुल में ही किया जायेगा।
- सम्पर्क सूत्र :- 094664-03222, 094666-13413

रामस्वरूप शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

राष्ट्रभाषा हिन्दी की वर्तमान दशा.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

माना जाता है जहाँ शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी है और वह विद्यालय इस भारतवर्ष में सर्वोत्कृष्ट है जहां हिन्दी के पीरिएड के अतिरिक्त विद्यार्थी के मुंह से हिन्दी का शब्द निकल जाने पर दण्डित किया जाता है।

उपर्युक्त समस्त विवरण से यह स्पष्ट है कि हमारे देश में भाषा की परतन्त्रता अभी तक दूर नहीं हुई है। दासता की मानसिकता जन-जन के हृदय में इस कदर घर कर गई है कि इस पराधीनता की मनोवृत्ति से व्यक्ति उबरना नहीं चाहता। कुछ अंग्रेजी-परस्त लोग यह कहते हैं कि हिन्दी से देश की उन्नति नहीं कर सकता जबकि वास्तविकता यह है कि यह देश हिन्दी के बिना उन्नति नहीं कर सकता। हिन्दी अपने आप में अत्यधिक समृद्ध भाषा है। इसका साहित्य विपुल और समृद्ध है। इसकी लिपि देवनागरी दुनिया की लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक है। हिन्दी को संस्कृत का सबसे बड़ा वरदहस्त प्राप्त है, क्योंकि हिन्दी में आधे शब्द संस्कृत के ही हैं। इस भाषा में नए शब्द रचने की असाधारण क्षमता है। हिन्दी भाषा का जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में समझी जाने वाली भाषाओं में प्रथम स्थान है (चीनी का दूसरा, अंग्रेजी का तीसरा तथा स्पेनी का चौथा स्थान है)।

सन् 1999 के आंकड़ों के आधार पर विश्व की जनसंख्या 5,84,87,39,000 है तथा हिन्दी समझने वालों की संख्या 1,10,29,96,447 है, जो कुल संख्या का 18.9 प्रतिशत चीनी भाषा को समझने वालों की संख्या-1,05,27,88,495 है जो कुल जनसंख्या का 18 प्रतिशत है। भारत के अतिरिक्त 44 देशों में न्यूनाधिक संख्या में हिन्दी समझने वाले लोग रहते हैं। भारत से बाहर लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन-पाठन की सुव्यवस्था है। स्वयं इंग्लैण्ड में 35 विश्व-विद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। भारत में भी आधे से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी है। समस्त भारत की सम्पर्क भाषा बनने की क्षमता हिन्दी में ही है। जो व्यक्ति हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को संपर्क भाषा बनाने के पक्ष में हैं वह राष्ट्रप्रेमी नहीं, अपितु देशद्रोही हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा था—"अपनी माँ को नि:सहाय, निरुपाय और निर्धन दशा में छोड़कर जो मनुष्य दूसरे की माँ की सेवा-शुश्रूषा में रत है, उस अधम की कृतघ्नता का क्या प्रायश्चित्त होना चाहिए इसका निर्णय कोई मनु, याज्ञवल्क्य या आपस्तम्ब ही कर सकता है।" भारत की सर्वांगीण उन्नति हिन्दी से ही हो सकती है। चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, रूस आदि अनेक विकसित देशों के उदाहरण हमारे समक्ष हैं, जिन्होंने अपनी ही भाषा के द्वारा अपना वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास किया है।

समय का तकाजा है कि हमें अपना वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास करने के लिए हिन्दी की शरण में जाना पड़ेगा। हिन्दी के सम्मान को बढ़ाने के लिए अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को रोटी की भाषा बनाना पड़ेगा। आज हिन्दी प्रचार और प्रसार की भारत में उतनी कमी नहीं है जितनी हिन्दी के सम्मान की। अंग्रेजी का पढ़ना-पढ़ाना बुरा नहीं है, परन्तु भारत के बच्चों पर अनिवार्य रूप से इसे थोंपना बुरा है। उसे हिन्दी के पद पर आसीन करना बुरा है। अत: यदि राष्ट्र का चहुंमुखी विकास करना है तो सम्पर्क भाषा के रूप में पूर्णरूप से हिन्दी को अपनाना होगा, हिन्दी का पठन-पाठन और प्रचार-प्रसार करना होगा और राष्ट्रीय ध्वज से भी अधिक हिन्दी का सम्मान करना होगा, उस पर गर्व करना होगा।

शिविर सूचना

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक 28 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2013 तक

स्थान : गुरुकुल मैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

अध्यक्षता : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़ वाले)

आशीर्वचन : **पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी**

शिविर में भाग लेने वाले साधक को पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा शिविर शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव 27.10.13 की सायं तक पहुँचें।

निवेदक : प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पर्क सूत्र : 9355674547, 9466008120, 9215676662

www.thearyasamaj.org

उफ! यह गरीबी

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं— ''पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।''

आर्यावर्त्त के बारे में ऐसी बात लिखने वाले स्वामी दयानन्द ने अपनी आंखों के सामने ही इस देश में इतनी घोर दरिद्रता देखी कि माँ के पास अपने बेटे की लाश का अंतिम संस्कार करने के लिए न तो लकड़ियों का प्रबन्ध है और न ही उसे ढकने के लिए कफ़न का प्रबन्ध था। स्वामी जी उस समय कटते हुए पशुओं व दूध-घी की कम होती मात्रा पर घोर शोक व्यक्त करते थे।

विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा बनाई गई ऐसी परिस्थितियों से छुटकारा दिलाने के लिए ही भगतसिंह जैसे वीरों ने कुर्बानी दी थी। देश का दुर्भाग्य आजादी के बाद देश की सत्ता ऐसे लोगों के हाथों में आई कि देश को भय, भ्रष्टाचार, भुखमरी से निजात दिलाने का स्वप्न देखने वाले वीरों के स्वप्न चकनाचूर हो गए।

कुछ दिन पहले मैं भिवानी स्टैण्ड, रोहतक से कुछ आयुर्वेदिक औषधियाँ लेकर चलने लगा तो पीछे से किसी ने आर्त्तनाद किया। मुड़कर देखा तो मैले-कुचैले वेश व जीर्ण-शीर्ण शरीर वाली एक अधेड़ आयु की भिखारिन थी, उसके पास ही एक छोटा बच्चा धूप में बैठा एक रोटी का टुकड़ा चबा रहा था। उस महिला ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया और मैंने उसे 100 रुपये का एक नोट दिया। उस दिन की वह कारुणिक व मार्मिक स्थिति स्मृति में अनेक दिनों तक बनी रही।

एक ओर प्रसंग फिर ध्यान में आ गया। मैं शहीद संदीप आर्य के साथ प्रचार कार्य पर था। हम दोपहर में एक पार्क में बैठकर साथ लाया खाना खाने लगे। हमारे सामने बैठे एक युवा ने भी अपनी खाने की पोटली खोली। अचारी के साथ रोटी खाने लगा। उनके चेहरे पर विशेष शुष्कता व आंखों में शून्यता थी।

बाद में मैंने उसे देखा कि वह उमंग रहित हुआ बैठा रहा जैसे कि उसके सपने चकनाचूर हो गये हों। मैंने शहीद संदीप को उस समय कहा था कि हो सकता है कि यह किसी फैक्ट्री में काम करता हो। घर से दूर रहना, काम अधिक वेतन कम, योग्यता के अनुसार काम न मिलना आदि कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जो युवाओं को तनाव में रहने पर विवश करती हैं।

वर्तमान में दैनिक पत्रों के माध्यम से पता चला कि अम्बाला (हरयाणा) में एक 42 वर्षीय गृहस्थ ने अपने छः वर्षीय पुत्र व पत्नी के साथ गरीबी से तंग आकर आत्महत्या कर ली। यद्यपि यह समस्या का समाधान नहीं। लेकिन समस्या उन राजनेताओं ने उत्पन्न की है, जिसके कारण दूध, घी, दाल आदि भी अमीरों के भोजन बनकर रह गये हैं। उफ! कब इस कुव्यवस्था का नाश होगा और गरीबी मिटेगी?

सुन्दरगढ़ जिले के भूकनपड़ा ग्राम में धर्मरक्षा अभियान के अन्तर्गत दो सौ परिवारों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

ओडिशा एवं झारखण्ड की सीमा पर कुछ ग्रामों में 90 प्रतिशत भोले-भाले, सरल स्वभाव के वनवासी निवास करते हैं। इनकी सरलता का लाभ उठाकर कुछ राष्ट्रविरोधी तत्त्व इन्हें लोभ-लालच देकर राष्ट्रीय धारा से अलग करके विदेशी मतों में ढाल देते हैं। उन्हीं में से 200 परिवारों ने 14 जुलाई को श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुति देकर गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य एवं कुशल वैद्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पं० विशिकेशन जी शास्त्री के सान्निध्य में पुनः वैदिक धर्म को ग्रहण किया।

यह महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के मार्गदर्शन में उन्हीं के आदेशानुसार यह धर्मरक्षा अभियान का कार्यक्रम उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से चलाया जा रहा है, यह आयोजन श्री वा. परमानन्द जी, श्री वासुदेव जी होता के प्रयत्न से किया गया। इस कार्यक्रम में हजारों श्रद्धालु लोगों ने भी पहुँचकर यज्ञ में आहुति दी और प्रसाद ग्रहण किया। —आचार्य रणजीतार्य 'विवित्सु', मुख्याध्यापक

प्रो. (डॉ.) सुन्दरलाल कथूरिया की महत्त्वपूर्ण कृति 'अद्यतन हिन्दी कविता : नये संदर्भ' लोकार्पण

बाएँ से : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ० देवराज पथिक, डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया, श्री जंग बहादुर।

नई दिल्ली। अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुंज, हरिद्वार के तत्त्वावधान में, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (पश्चिमी दिल्ली) की ओर से आर्यसमाज, जनकपुरी के विशाल सभागार में लोकार्पण, संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के दौरान मूर्धन्य समालोचक एवं भावनगर विश्व-विद्यालय, भावनगर, गुजरात के हिन्दी-विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक **'अद्यतन हिन्दी-कविता : नये संदर्भ'** का लोकार्पण भी किया गया। महाकवि 'निराला' के बाद की हिन्दी-कविता के नवीन प्रयोगों, अभिव्यक्ति कौशल, विसंगत परिवेश, युगीन आतंक-संत्रास-अपराध की प्रवृत्ति, राजनीतिक छल-छद्म, बढ़ती महंगाई, आम आदमी की दुर्दशा, बिम्ब-प्रतीक-मिथक और बहु-आयामी काव्य-भाषा का विवेचन करने वाली इस पुस्तक का लोकार्पण आस्ट्रेलिया से आये वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० देवराज पथिक, साउथ-वैस्ट जिला उपनिदेशक शिक्षा श्री जंग बहादुर एवं वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने संयुक्त रूप से किया। विमोचन करते हुए डॉ. पथिक ने कहा कि काव्यालोचक प्रो. कथूरिया ने इस ग्रंथ में समय की करवटों के साथ बदलती काव्य-चेतना और अद्यतन हिन्दी कविता के नये संदर्भों की अच्छी पहचान और परख की है। निःसन्देह यह कृति समकालीन हिन्दी काव्य-समीक्षा के क्षेत्र में एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है।

इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने कहा कि इस ग्रंथ में दो-ढाई सौ अल्पचर्चित या उपेक्षित कवियों की न केवल चर्चा की गई है, वरन् आस्थावादी काव्य-धारा के साथ राष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक काव्य-चेतना को भी उजागर किया गया है। इस पुस्तक में उल्लिखित कवियों का नोटिस लिये बिना अद्यतन हिन्दी-कविता का इतिहास आधा-अधूरा ही रहेगा। कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार श्री विनोद बब्बर ने कहा कि इस ग्रंथ का प्रकाशन अवध प्रकाशन, शान्ति मोहल्ला, गांधीनगर, दिल्ली-31 ने किया है। लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं तथा यह ग्रन्थ 'काव्य-प्रेमियों' एवं समीक्षकों के लिए बहुत उपयोगी है।

'भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका' पर बोलते हुए विद्वानों ने इसका विवेकपूर्वक प्रयोग करने पर बल दिया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान-परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों एवं उनके मार्गदर्शक अध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। डॉ. कथूरिया एवं अन्य विद्वानों को भी इस अवसर पर शॉल, पुष्पगुच्छ, ग्रन्थादि भेंटकर सम्मानित किया गया।

समारोह में बहुत बड़ी संख्या में प्राचार्य, अध्यापक, छात्र, साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे। संयोजक श्री के.एल. सचदेवा ने सभी का धन्यवाद किया। —खैरातीलाल, संयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।